दिनांक 27 अप्रैल, 2023 को स्व. श्री निर्मल कुमार जी जैन (सेठी) की स्मृति में मनाए जाने वाले "जैन धरोहर दिवस" के अवसर पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी संबोधन

इस पवित्र कार्यक्रम में उपस्थित सम्मानित महानुभावों, समाज के मेरे भाइयों और बहनों,

सबसे पहले मैं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, नई दिल्ली और श्री दिगम्बर जैन पंचायत, गुवाहाटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित "जैन धरोहर दिवस" पर आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं।

वास्तव में, स्व. श्री निर्मल कुमार सेठी जी भारतीय संस्कृति के संरक्षक थे। वे एक युग-द्रष्टा थे। सचमुच महान आत्माएँ युग परिवर्तन कर देती हैं। उनकी जीवन गाथाएँ उनके अनुपम कार्य, उनकी सरल शैली जन-जन में नवजीवन संचरित करती हैं। आज का युग, वैज्ञानिक युग है। उत्तरोत्तर विज्ञान के बढ़ते हुए चरण विद्युत की विविध शक्तियों को पाकर परमाणु के क्षेत्र में पहुँच चुके हैं। थल, जल और नभ पर विजय पाकर अनन्त अन्तरिक्ष के चन्द्र, मंगल और शुक्र आदि ग्रहों पर दुनिया बसाने की तैयारी हो रही है। भौतिकवाद की गतिशीलता ने दुनिया के निरन्तर इंसानों के जीवन को विविध रूप में प्रभावित किया है। अपितु आज की

दुनिया पर भौतिकवाद ने जरूरत से ज्यादा हावी हो गया है। भौतिकवाद मानवों के रहन-सहन, आचार-विचार, धर्म-कर्म, रीति-नीति, सभ्यता और संस्कृति में बहुत बड़ा परिवर्तन ला दिया है।

मित्रों,

बढ़ते हुए जड़वाद के प्रभुत्व ने मानव के हृदय की सुकोमल वृत्तियाँ जैसे श्रद्धा, स्नेह, दयार्द्रता, परोपकारिता, नैतिकता, सदाचारता, धार्मिकता को लगभग कुंठित कर दिया है। भौतिकवाद के झंझावत ने धार्मिक श्रद्धा के दीपक को बुझा सा दिया है। इंसान के आध्यात्मिक जीवन का अवमूल्यन हो रहा है, जिसके कारण दुनिया में अशांति, असंतोष, दुख और क्लेश की वृद्धि हुई है। ऐसी विषम परिस्थितियों में एक आशा-दीप जो दुनिया को प्रलय के अंधकार में डूबने से बचा सकता है वह आशा का दीपक है धर्म, इस आशा के दीपक को धाारण करने वाला ही धर्मवीर कहलाता है। वर्तमान के संक्रान्ति काल में धर्मवीर की संज्ञा पर यदि कोई आजीवन खरा उतरा था तो वे थे परम आदरणीय स्वर्गीय श्री निर्मल कुमार जैन सेठी जिन्हें हम श्रद्धा से 'बाबू जी' कहते थे। 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' की तरह ही उनके बारे में लिखना, उनके कार्यों को गिनना, उनके समर्पण को आंकना उनके जीवन चरित्र में झांकना सर्वाधिक दुष्कर था। चारों ओर विशाल समुद्र के अलावा कुछ नजर नहीं आता, जिधर देखो उधर उनके नेह, वात्सल्य, करुणा का सागर उछाले मार-मारकर अपने सभी तटबंधों को सिक्त कर रहा होता था।

उदात्त हृदय के बेजोड़ मिशाल थे स्व. निर्मल कुमार जैन जी। एक ऐसा विराट व्यक्तित्व जिसके आगे दुनिया की समस्त सम्पदा छोटी पड़ जाती, एक ऐसी गहरी सोच जिसके समक्ष समस्त प्रश्नों की इतिश्री हो जाती थी। जिस तरह आकाश को उसकी ऊंचाई से मापा नहीं जा सकता, उसी तरह 'बाबूजी' के कार्यों को शब्दों में नहीं गिना जा सकता। उनके समर्पण को, उनके सद्कार्यों को महसूस किया जा सकता है दिल की गहराईयों से भावनाओं की नाव में बैठकर धर्म के चप्पूओं से तब पता लगता है कि हम जिसके बारे में सोच रहे हैं, वह कितना विराट व्यक्तित्व था। बाबू जी ऐसे अमृतमय धर्म रसायन थे अपनी वाणी से, अपने कार्यों से जन-जन के हृदय में बस कर उन्हें असंतोष से मुक्ति दिलाते थे, मैंने जहाँ तक उन्हें समझा हूँ कि वह ऐसे सूत्रधार थे जिन्होंने जैन संस्कृति को जन-जन की संस्कृति, मानव की संस्कृति बनाने में अपार योगदान दिया है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र संपदा के धनी, कथनी और करनी की एकरूपता के प्रतीक, जिनदर्शन के प्रचारक, संवाहक एवं तीर्थ संरक्षण में सदैव अग्रसर, वाणी की अद्वितीय चुम्बकीय शक्ति द्वारा प्रभाव बिखेरने वाले बाबू जी को मैंने सदैव गहन चिन्तक रूप में पाया था। उनका आलौकिक गंभीर वर्चस्व, वाक् पटुता, सहजता, सरलता, मृदुता समता और समन्वयात्मकता उनके प्रत्येक कार्य में परिलक्षित होती थी।

श्रमण संस्कृति के यशस्वी पुरोधा थे - निर्मल कुमार जैन जी सेठी। संपूर्ण भारत वर्ष जानता है कि श्री निर्मल कुमार सेठी जी चार दशकों तक श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष पद पर सुशोभित थे। इतने लंबे कार्यकाल में उन्होंने महासभा को नवीन ऊँचाईयां प्रदान कीं, अपनी निःस्वार्थ सेवा, समर्पण से महासभा के सैकड़ों शाखाओं ने देश-समाज और संस्कृति के प्रत्येक आयाम को छुआ। महासभा की सभी विधायें- धर्म, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी, महिला महासभा, जैन राजनैतिक चेतना मंच, युवा महासभा, वर्तमान में जैन समाज के लिए दिशा निर्देशक, समाज के संगठन, देव-गुरु-शास्त्र की भक्ति एवं तीर्थों के संरक्षण संवरण, मुनि आहार-विहार के क्षेत्र में अभूतपूर्व यश अर्जित किया है। बाबूजी ने महिलाओं को सक्षम और साक्षर बनाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी।

श्री निर्मल कुमार सेठी जी नारी शक्ति के उन्नायक के रूप में भी हमेशा याद किए जाएंगे। उन्होंने महिला महासभा का गठन करके उसे एक स्वतंत्र शाखा के रूप में स्थापित कर इसकी बागडोर श्रीमती सरिता महेन्द्रकुमार जैन (चेन्नई) के हाथों में सौंप दी। सरिता जी ने भी बाबू जी के दिशा निर्देशन में लगभग पच्चीस हजार महिलाओं का संगठन तैयार करके महिला महासभा की 120 शाखाओं की स्थापना की। प्रत्येक दिगम्बर जैन महिला को संस्कारित जीवन जीने, मुनि तथा तीर्थों की अर्चना, सेवा करने का सर्वाधिक जरूरी समझकर उन्हें शिक्षित और

समर्थ बनाने का बाबू जी का स्वप्न को सार्थक किया है। कहना गलत नहीं होगा कि परम आदरणीय बाबू जी वात्सल्य विभूति, विनम्रता की सजीव मूर्ति, मोक्ष मार्ग के पथिक, आर्ष मार्ग के स्तंभ तथा दानवीरता में सबसे अग्रणी जीव थे।

श्री निर्मल कुमार सेठी जी नि:स्वार्थ समाज सेवा के महाव्रती थे। लखनऊ के उच्च जैन कुल में जन्म लेने के पश्चात् भी अहंकार लेशमात्र नहीं था। अपना संपूर्ण जीवन साधु-सेवा-धार्मिक क्षेत्र को समर्पित किया। बात चाहे देश की हो या विदेशों में जैन धर्म प्रचार का उस समय उपसर्ग चाहे छोटे या विकराल क्यों न हों कि, दो-दो पुत्रों की असामयिक मृत्यु ने भी आपको कभी धर्म पथे से विचलित नहीं होने दिया। किसमें सामथ्र्य थी, जो आपके हृदय की गहराई और जीवन के आदर्शों की ऊंचाई माप सके, आपके गुणों के समक्ष सब कुछ बौना हो जाता था। जो लोग आपसे और आपके गुणों से भलीभांति परिचित थे वे आपको गृहस्थ जीवन में, वस्त्र पहने साधु कहकर बुलाते थे। कहते हैं, संत अपने लिए नहीं, विश्व के लिए जीता है और विश्व कल्याण के लिए प्राणोत्सर्ग कर देता है। प्रसिद्‌ध वक्ता जैन संस्कृति के महानायक श्री निर्मल कुमार सेठी जी लोकनायक व्यक्तित्व के धनी थे। उनके जीवन के क्षण-क्षण में करुणा, वत्सलता, परोपकार परायणता और विश्व कल्याण की कामना रची हुई थी, जैसे फूलों की कली में सौरभ, इसके निर्मल हृदय के जल के प्रत्येक कण में अकूत शीतलता से व्याप्त थे। बाबूजी की उदारता से

गरीब, अमीर, राजा, रंक, नौकर सभी लाभान्वित हुए, जागृत हुए जीवन उत्थान के लिए प्रेरित हुए। उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में अपनी कर्मण्यता का परिचय दिया था।

सेठी जी समन्वय एवं सामंजस्य के प्रबल पक्षधर थे। धार्मिक क्षेत्र या सामाजिक, राजनीति का आंगन हो, या शिक्षा का क्षेत्र हो, सभी पर समान दृष्टि बाबू जी की समतावादी नीति अनुकरणीय थी, बाबूजी समतावादी सिद्धांत के सूर्य की भाँति संयममय तेजस्विता की ऊष्मा और ज्ञान का प्रकाश जैसे थे। इस युग मे शायद ही कोई और हो जिसने जैन समाज की एकता और महासभा संगठन के लिए इतना त्याग किया हो।

निर्मल कुमार जैन जी सहजता और सरलता की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने जो किया था, उसे सदियों तक जैन समाज याद रखेगीं। मसला चाहे जैनियों को अल्पसंख्यक दर्जा दिलाने का हो तो अथवा राजनैतिक क्षेत्र में जैनों की उपस्थिति का, उन्होंने सभी विषयों पर अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिया था। यद्यपि बाबू जी त्यागी और निस्पृही व्यक्तित्व के धनी थे, इसलिए वैभव चरणों में लोटता रहा, उनकी-प्रतिष्ठा की सौरभ अनचाहे अंजाने फैलती रहीं, दूर-दूर तक उन्हें इसका कभी गुमान नहीं हुआ। अचानक कोरोना काल में 27 अप्रैल 2021 को जैन संस्कृति के समुन्नायक स्वर्गीय श्री निर्मल कुमार जैन सदा के लिए अस्त हो गये।

जैन संस्कृति के समुन्नायक स्वर्गीय श्री निर्मल कुमार जैन सेठी की

पुण्यतिथि को "जैन धरोहर दिवस" मनाना - उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है। मैं उस महान आत्मा के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

आप सभी को एक बार पुनः बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिंद !